यादों के पाखी

सम्पादक :
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
डॉ. भावना कुँअर
डॉ. हरदीप कौर सन्धु

- जिन द्वारों पे
दस्तकें दीं ताउम्र
कोई भी न था।
-डॉ. भगवतशरण अग्रवाल
- स्मृति बुनती
दु:खों के करघे में
पीड़ा का थान।
-डॉ. सुधा गुप्ता
- वे मेरे मीत
चित में छपे हुए
जिनके गीत!
-डॉ. मिथिलेश दीक्षित
- बीते वे दिन
बीत गईं वे रातें
बची हैं यादें।
-डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव
- भीगती शाम
साथ-साथ लिखे थे,
पेड़ों पे नाम।
-डॉ. गोपाल बाबू शर्मा
- उजास फैली
भोर किरन नहीं,
तेरी याद थी।
-डॉ. उर्मिला अग्रवाल
- भोर न भाई
जिस दिन भी तेरी
याद न आई।
-रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
- यूँ खोलो मत
भूली-बिसरी हुई
यादों के ख़त।
-डॉ. भावना कुँअर
- पाखी हैं यादें
मन खुला आसमाँ
उड़ी ये कहाँ।
-डॉ. हरदीप कौर सन्धु

यादों के पाखी • रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'/डॉ. भावना कुँअर/डॉ. हरदीप कौर सन्धु

यादों के पाखी

(हाइकु-संग्रह)

खाली

यादों के पाखी

(हाइकु-संग्रह)

सम्पादक
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
डॉ. भावना कुँअर
डॉ. हरदीप कौर सन्धु

◆

संयोजन
रचना श्रीवास्तव

अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली

ISBN : 978-81-7408-

अयन प्रकाशन
1/20, महरौली, नई दिल्ली-110 030
दूरभाष : 2664 5812
e-mail : ayanprakashan@rediffmail.com

•

मूल्य : 200.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2012 © सुरक्षित

YADON KE PAAKHI (Haiku) Ed.by Rameshwar Kamboj 'Himanshu',
Dr. Bhawna Kunwar, Dr. Hardip Kaur Sandhu. Comp. by Rachna Shrivastav

मुद्रक : विशाल कौशिक पिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110 093

भूलता नहीं / एक सूखा गुलाब / बन्द किताब!

तुलसीदास जी ने जीवन की बहुत सारी कटुताएँ सहीं और रामचरित मानस जैसी अद्वितीय कृति संसार को दी। बालकाण्ड में वे सच्चे भाव से उन दुष्टों को भी प्रणाम करते हैं, जो अपना हित करने वाले के प्रति भी अकारण प्रतिकूल आचरण करते हैं। उनके लिए दूसरों की हानि ही सच्चा लाभ है। इन्हें दूसरों के उजड़ने में हर्ष और बसने में दुःख होता है –

बहुरि बन्दि खल गन सतिभाएँ। जे बिनु काज दाहिनेहु बाएँ।
पर हित हानि लाभ जिन्ह केरें। उजरें हरष विषाद बसेरें।।

तुलसी दास जी ने संत और असंत दोनों को ही दुःखदायी बताया है। क्यों? दोनों ही दुःख देते हैं – संत भी, दुष्ट भी। एक बिछुड़ते समय दुःख देता है, क्योंकि हम उससे अलग होना नहीं चाहते और दूसरा मिलते समय दुःख देता है, क्योंकि हमें उससे मिलना पसन्द नहीं–

बिछुरत एक प्रान हर लेहीं। मिलत एक दुख दारुन देहीं।।

हम इन सबको किसी न किसी रूप में याद करते हैं। जब हम अपने बीते जीवन पर नज़र डालते हैं तो 'यादें' शब्द कहते ही बहुत कुछ सामने आ जाता है – कुछ कहा और बहुत कुछ अनकहा। ऐसा लगने लगता है जैसे पूरे बदन पर कान उग आए हों और अनकहा सुनने के लिए बेताब हों। कभी ये यादें मन को सुकून देने लगती हैं और कभी ये सुकून लूट भी लेती हैं और कभी–कभी तो रूप बदलकर आती हैं और मन में ताक–झाँक करने लगती हैं–

◆रौशन मन / टिमटिमाई याद / जुगनू बन।

यादों पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है और लिखा जा रहा है; लेकिन इनको हाइकु में एक साथ विधिवत् पिरोने का शायद यह पहला प्रयास है। या

फिर यूँ कहें कि सभी के मन के भावों में पंख लगाकर ये यादें निकल पड़ी हैं उन लोगों के मन तक; जिनके मन में भी खट्टी-मीठी यादें तो हैं, पर उन्हें इस व्यस्त ज़िन्दगी में वक्त ही नहीं मिला कि वे उनको याद कर सकें और एक-दूसरे से बाँट सकें। शायद हमारा यह प्रयास उनके मन की परतों को भी आसानी से खोल सकेगा और उन परतों के खुलने से वे सभी लोग एक सच्चे आनन्द का अहसास कर सकेंगे। यादों की बरसात में जब कोई भीगने लगता है, तो उसे किसी बात की चिन्ता नहीं होती। बस भीगता चला जाता है। वह भीगना सुखद और दु:खद दोनों प्रकार का होता है-

◆लो होने लगी / यादों की बरसात / भीगा रे मन।

हमें तो यादें कभी-कभी इस दुनिया का वह सबसे बेहतर खिलौना लगती हैं, जो सबके पास होता है, चाहे वो अमीर हो या गरीब। सबसे अच्छी बात तो यह है कि इसे खरीदने के लिए कहीं भी हमें जाने की ज़रूरत नहीं होती। बस दो पल एकांत ही चाहिए, इस खिलौने से खेलने के लिए।

◆याद - खिलौना / छन-छन बजाया / मन हँसाया।

कितने रंग अपने में समेटे हुए हैं ये यादें - जो कभी तो तितली बनकर हमारे पास मँडराती हैं, तो कभी भौंरा बनकर कान में गुन-गुन कर कुछ कह जाती हैं, कभी चाँद बनकर मन के आँगन में नन्हीं-नन्हीं किरणों को उतारकर उसमें उजाला भर देती हैं, तो वहीं सूरज बनकर विरह में लिपट कर झुलसा डालती हैं, और फिर कभी तो नन्हें छौने का रूप लेकर मन में खलबली मचा देती हैं -

◆यादों के छौने / मन की डगर में / छलाँग भरें।

आज के युग में एकाकीपन बहुत बढ़ गया है जो आदमी को डुबो डालता है उदासी की गहरी खाइयों में और कभी-कभी तो गहरे अवसाद का कारण बन जाता है। अब ऐसे वक़्त में सच्ची साथी साबित होती हैं किताबें। ये किताबें हमें दूर रखती हैं अँधेरों से। चाहे वो अँधेरा अज्ञान का हो या एकाकीपन का, हमें दूर रखती हैं अवसाद से; क्योंकि यादें तो स्वछन्द हैं, कहीं भी आ-जा सकती हैं तभी तो गुलाब की पंखुड़ी का रूप लेकर जा बैठी पुस्तक के पन्नों में और भटकी-सी एक याद रूपी मुस्कान फिर से चेहरे को गुलाबी कर गई और हर ले गई अवसाद को कोसों दूर -

◆भूलता नहीं / एक सूखा गुलाब / बन्द किताब!

हाइकु संकलन 'यादों के पाखी' में सभी हाइकुकारों ने अपने-अपने हिस्से की यादों को जब कुरेदा तो कभी फूलों की वर्षा हुई, तो कभी काँटों की चुभन का अहसास हुआ। कभी ये यादें कवि को सतरंगी इंद्रधनुष की छटा बिखेरते हुए आसमाँ पर ले गईं, तो कभी एक अँधेरी गुफ़ा में बन्द कर दिया, जिसका द्वार ढूँढना भी कठिन था। लेकिन यादों के पाखी उड़ते चले गए; क्योंकि ये ऐसे पाखी हैं जो उड़ने से पहले किसी की इज़ाज़त लेने के मोहताज़ नहीं होते। और देखिए एक नहीं, एक साथ विभिन्न देशों में नीड़ बसाए 48 पाखी 793 हाइकुओं के साथ उड़ान भरते नज़र आएँगे। इनमें से बहुत से पाखी ऐसे हैं, जो कभी एक दूसरे से मिले नहीं, फिर भी सबके बीच कुछ ऐसा है, जो एक जैसा है। सबकी उमंग एक जैसी है, सबके आँसू एक जैसे हैं, हृदय में उमड़ती सुख-दु:ख की लहरें एक जैसी हैं। इनमें से अधिकतर 'हिन्दी हाइकु' के सरोवर में गोता लगाते मिल जाएँगे। 'यादों के पाखी' (हाइकु-संग्रह) में एक बात सामने आती है कि कोई साधु-संत हो या संसारी, सबके मन में सुख के फूल हैं तो दु:खों के शूल भी हैं। सबकी स्मृति अन्ततः दुखदायी है, चाहे स्नेह करने वाले हों, चाहे धोखा देने वाले हों। आदमी कभी किसी को नहीं भूलना चाहता - न प्यार करने वाले को, न वैर निभाने वाले को।

◆साथ उड़ेंगे / अपना है अम्बर / यादों के पाखी।

एक साथ इतने सारे हाइकु, वह भी एक ही विषय पर! ये सब हाइकु की शक्ति का अहसास कराते हैं, साथ ही यह भी अहसास कराते हैं कि भाव का सागर एक नन्हें से हाइकु में समेटना आज के कवि को खूब आता है। इस तरह का पहला कार्य 'सवेरों की दस्तक' (नारी विषयक हाइकु) सम्पादक - डॉ. सुधा गुप्ता और डॉ. उर्मिला अग्रवाल का देखने को मिलता है। 'यादों के पाखी' संग्रह में एक ओर डॉ.भगवत शरण अग्रवाल, डॉ. सुधा गुप्ता, डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव, डॉ. गोपालबाबू शर्मा जैसे वरिष्ठ रचनाकार हैं तो दूसरी ओर एकदम नए रचनाकार भी हैं, जिन्हें हाइकु लिखते हुए एक-दो वर्ष ही हुए होंगे। इनमें डॉ. अनीता कपूर, डॉ. अमिता कौण्डल, डॉ. उमेश महादोषी, उमेश मोहन धवन, ऋता शेखर प्रसाद, कमला निखुर्पा, कृष्णा वर्मा, चन्द्र बली शर्मा, डॉ. जेन्नी शबनम, ज्योतिर्मयी पन्त, डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा, तुहिना रंजन, दविन्द्र कौर सिद्धू, दिलबाग सिंह विर्क, प्रगीत कुँअर, प्रियंका गुप्ता, भावना सक्सेना, मंजु मिश्रा, मुमताज टी एच खान, रचना श्रीवास्तव, वरिन्द्रजीत सिंह

बराड़, डॉ.श्याम सुन्दर 'दीप्ति', संगीता स्वरूप 'गीत', सरस्वती माथुर, सारिका मुकेश, सीमा स्मृति, सुभाष नीरव, सुशीला शिवराण आदि। इनमें कुछ ऐसे रचनाकार भी हैं जो अन्य विधाओं में कई दशक से सक्रिय हैं; लेकिन हाइकु-क्षेत्र में अभी जुड़े हैं। सभी नए हाइकुकारों के हाइकु एक ताज़गी का अहसास कराते हैं। सभी ने कुछ न कुछ नया कहा है, नए ढंग से कहा है।

इस संग्रह को तैयार करने में आदरणीया दीदी डॉ. सुधा गुप्ता जी ने हमें प्रेरित ही नहीं किया; बल्कि बहुत से उपयोगी सुझाव भी दिये। एक पूरी पीढ़ी को अपने अध्यवसाय से सींचने वाले हाइकु के शिखर पुरुष श्रद्धेय डॉ. भगवत शरण अग्रवाल जी ने निरन्तर हमारा हौसला बढ़ाया। इनके लिए हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

हाइकु की शृंखला को निरन्तर आगे बढ़ाने में अयन प्रकाशन के श्री भूपाल सूद जी उसी जोश से जुटे हैं, जिस जोश से कभी लघुकथा को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए संकल्परत रहे। हम इनके भी हृदय से कृतज्ञ हैं।

आशा है प्रबुद्ध पाठकों को हमारा यह प्रयास पसन्द आएगा।

17 जुलाई 2012

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
डॉ. भावना कुँअर
डॉ. हरदीप कौर सन्धु

अपने अध्यवसाय से

हाइकु विधा को कई दशक तक

पल्लिवत-पुष्पित करने वाले

हाइकु के शिखर पुरुष

श्रद्धेय डॉ. भगवत शरण अग्रवाल जी को

सादर समर्पित !!

अनुक्रम

1.	डॉ. भगवतशरण अग्रवाल	13
2.	डॉ. सुधा गुप्ता	18
3.	डॉ. मिथिलेश दीक्षित	23
4.	डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव	28
5.	डॉ. गोपाल बाबू शर्मा	30
6.	डॉ. उर्मिला अग्रवाल	32
7.	रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'	35
8.	डॉ. भावना कुँअर	40
9.	डॉ. हरदीप कौर सन्धु	45
10.	डॉ. सतीश राज पुष्करणा	50
11.	चन्द्रबली शर्मा	52
12.	प्रगीत कुँअर	55
13.	रचना श्रीवास्तव	60
14.	कमला निखुर्पा	64
15.	डॉ. जेन्नी शबनम	67
16.	सुशीला शिवराण	71
17.	प्रियंका गुप्ता	75
18.	डॉ. अनीता कपूर	79
19.	डॉ. श्याम सुन्दर 'दीप्ति'	82
20.	डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा	85
21.	रेखा रोहतगी	88

22. श्याम सुन्दर अग्रवाल 90
23. सुदर्शन रत्नाकर 92
24. सुभाष नीरव 94
25. मंजु मिश्रा 96
26. राजेन्द्र मोहन त्रिवेदी 'बन्धु' 98
27. स्वाति भालोटिया 100
28. डॉ. सरस्वती माथुर 102
29. प्रो. दविंद्र कौर सिद्धू 104
30. वरिन्दरजीत सिंह बराड़ 106
31. डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र 108
32. डॉ. रमा द्विवेदी 109
33. संगीता स्वरूप 111
34. मुमताज टी एच खान 113
35. डॉ. उमेश महादोषी 115
36. अमिता कौण्डल 117
37. ऋता शेखर 'मधु' 119
38. सीमा स्मृति 120
39. भावना सक्सेना 122
40. कृष्णा वर्मा 123
41. तुहिना रंजन 125
42. सारिका मुकेश 127
43. ज्योतिर्मयी पन्त 129
44. दिलबाग विर्क 130
45. पुष्पा जमुआर 132
46. उमेश मोहन धवन 134
47. अनुपमा त्रिपाठी 135
48. कृष्ण कुमार कायत 136

डॉ. भगवतशरण अग्रवाल

:: 1 ::
घूमता मन
बचपन की घनी
अमराई में।

:: 2 ::
फूला पलाश
यादों के दीप सजा
आया वसन्त।

:: 3 ::
यादें ही यादें
आँखें बन्द कीं तो क्या!
चित्र उभरे।

:: 4 ::
नींद में मेरी
आती हैं परिएँ क्यों
बचपन की।

:: 5 ::
मेरे मन की
विस्तृत नभ गंगा
चित्र तुम्हारा।

:: 6 ::
वर्षों पहले
तुमसे कीं जो बातें
आज भी ताज़ी।

:: 7 ::
ऐसे बरसी
बदली आज, भूले
याद आ गए।

:: 8 ::
आहट आते
उड़तीं तितलियाँ
मेरे मन में।

:: 9 ::
गुलाबी शीत
आलस्य-भरी हवा
यादों की शाम।

:: 10 ::
टहुके मोर
याद आ गया कौन
इतनी भोर?

:: 11 ::
भोर के साथ
महक किसकी थी
पागल मन!

:: 12 ::
रेत पै बस
लिखूँ मिटाऊँ नाम
और क्या करूँ?

:: 13 ::
भूलूँगा कैसे?
घरौंदे बनाए जो
मैंने - तुमने।

:: 14 ::
भूला नहीं हूँ
सूर्य-चन्द्र साक्षी हैं
नीहारी दिन।

:: 15 ::
मेरा अतीत
कुछ भी करूँ मैं, न,
नहीं छूटता।

:: 16 ::
मत कुरेदो
स्मृतियों के ढेर को-
ज्वालामुखी है।
(शाश्वत क्षितिज, 1985 से)

:: 17 ::
थोड़ा-सा रिश्ता
मेरी तन्हाइयों का
तुमसे भी है।

:: 18 ::
यादों के लम्हें
कड़वा - मीठा स्वाद
दर्दीला गीत।

:: 19 ::
घटा-सी घिरी
कमलों की सुगन्ध
वह आए क्या?

:: 20 ::
ओस में भीगी
कमल की पंखुरी
ऐसी थी कभी!

:: 21 ::
अकेलापन
रेगिस्तान-सा फैला
चमके यादें।

:: 22 ::
वर्षा की हवा
यादों के पन्ने लौट
किसे ढूँढ़ती ?
(टुकड़े-टुकड़े आकाश, 1987 से)

:: 23 ::
सिर्फ़ स्मृतियाँ
निपट एकान्त के
क्षणों में साथी।

:: 24 ::
उलटे - पलटे
रात रानी की गन्ध
यादों के पन्ने।

:: 25 ::
हर मोड़ पे
यादों के झरोखे से
तुम्हीं झाँकती।
(सबरस, 1997 से)

:: 26 ::
भूल जाऊँगा
रतजगों से कहो
पीछा छोड़ दें।

:: 27 ::
हर कदम
आहटें, परछाइयाँ
रीते मन की।

:: 28 ::
आज भी ताज़ी
यौवन के फूलों में
यादों की गन्ध।

:: 29 ::
अकेलापन
मन-दर्पण यादें-
चन्दन वन।

:: 30 ::
कुलबुलाते
अँखियों में सपने
मीठी यादों के।

:: 31 ::
साथ न जाते
यादों के कफ़न भी
भूलना अच्छा।

:: 32 ::
जब भी कोई
फूल खिला बाग में
तू याद आया।

:: 33 ::
तुम्हारी यादें
रात-रात करतीं
फूलों से बातें।

:: 34 ::
याद तो होगा
पुस्तकें बदलना
पृष्ठों में फूल।

:: 35 ::
जिन द्वारों पे
दस्तकें दीं ताउम्र
कोई भी न था। ❑

(इन्द्रधनुष - हाइकु काव्य,
संस्करण 2000 से साभार)

डॉ. सुधा गुप्ता

:: 1 ::
चिनार-वन
फिर से लगी आग
जी हुआ ख़ाक।

:: 2 ::
उमड़े मेघा
किरकिराया मन
बरसीं आँखें।

:: 3 ::
सावन - रात
झिल्ली बोलती, फिर
खुलते ज़ख़्म।

:: 4 ::
भीगा कम्बल
यादों का, ओढ़े बने
न ही उतारे।

:: 5 ::
किसी की याद
बाँस-वन जुगनू
टिमक गया।

:: 6 ::
गीली रेत में
बिछलती फिरतीं
अन्धी सुधियाँ।

:: 7 ::
यादों के छौने
मन की डगर से
छलाँग भरें।

:: 8 ::
किसी की याद
फिर फडफ़ड़ाई
छाती में फाख़्ता।

:: 9 ::
यादों के फूल
आँखें छिड़कें पानी
महक उठे।

:: 10 ::
कूकी जो पिकी
एक हिलोर उठी
हिचकी बँधी।

:: 11 ::
भूलता नहीं
एक सूखा गुलाब
बन्द किताब।

:: 12 ::
पपीहा दिन
और चकवी रातें
काटे न कटें।

:: 13 ::
भटक गई
यादों के बीहड़ में
वहीं बसी हूँ।

:: 14 ::
ये सूनापन
यादों की रिमझिम
भीगा है मन।

:: 15 ::
जाले बुनतीं
यादों की मकड़ियाँ
नहीं थकतीं।

:: 16 ::
देखा जो तारा
माँ की लौंग का हीरा
कौंध मारता।

:: 17 ::
यादों की लोई
खूँटी पे टँगे-टँगे
कीड़े - कुतरी।

:: 18 ::
भटकी यादें
मन की पगडण्डी
ठिठकी खड़ी।

:: 19 ::
पूनों की रात
बटोर लाई किस्से
आँचल भर।

:: 20 ::
तेल न बाती
फिर-फिर रौशन
यादों के दीये।

:: 21 ::
शैशव-स्मृति-
गुलाब की पाँखुरी
ओस का मोती।

:: 22 ::
याद - चिरैया
मन की अटारी पे
तिनके जोड़े।

:: 23 ::
स्मृति बुनती
दु:खों के करघे में
पीड़ा का थान।

:: 24 ::
सूखता कण्ठ
मधु स्मृतियाँ जैसे
दो घूँट पानी।

:: 25 ::
पुरवा आई
फरफराए पत्ते
भीगी यादों के।

:: 26 ::
किसकी याद
सिसक रही रात
हिचकियाँ ले।

:: 27 ::
शैशव-स्मृति-
कनक-चम्पा खिली
महका मन।

:: 28 ::
थिरक रहीं
खुशनुमा यादों की
ये तितलियाँ।

:: 29 ::
स्मृति खोलतीं
तहाकर सँजोए
थान के थान।

:: 30 ::
खोया बसेरा
करते रतजगे
यादों के राही।

:: 31 ::
किताबों - दबे
मिलते मोर-पंख
भोले विश्वास।

:: 32 ::
बरसों बाद
घुँघरू-सी छनकी
तुम्हारी याद।

:: 33 ::
रात ढूँढ़ती
चाँद में बैठी नानी
काते थी चर्खा।

:: 34 ::
चैत की हवा
उड़ाए वन-गन्ध
भूली-सी स्मृति।

:: 35 ::
कूकी कोयल
चीरा-सा लगा गई
टपका लहू।

:: 36 ::
पुरवा आई
फरफराए पन्ने
भीगी यादों के।

:: 37 ::
सावनी घटा
फुहारों में कहती
यादों की कथा।

:: 38 ::
यादों की पोथी
गडमड हैं पन्ने
बाँचने बैठी। ❑

डॉ. मिथिलेश दीक्षित

:: 1 ::
यादों के पंख
और ऊँचा आकाश
श्वासों का पाश।

:: 2 ::
बड़े विचित्र
यादों के कैमरे से
खींचे हैं चित्र।

:: 3 ::
उतनी यादें,
जितना विस्तृत था,
वह अतीत।

:: 4 ::
आ ही जाती है
सपनों में भी याद
पुरानी बात।

:: 5 ::
नहीं भूलते-
मीठी-मीठी यादों में
मन के रिश्ते।

:: 6 ::
जीवन खिला
स्मृतियों का वैभव
हमको मिला।

:: 7 ::
माँगीं दुआएँ
यादों के मोतियों की
गूँथीं मालाएँ।

:: 8 ::
किया बसेरा
जीवन की संध्या को
यादों ने घेरा।

:: 9 ::
आने लगी है
यादों की धूप-छाँव
मन के गाँव।

:: 10 ::
सदा बहार,
सूखते कभी नहीं
यादों के घाव।

:: 11 ::
ढल न जाए
पत्थरों के बुत में
अपनी याद।

:: 12 ::
जीवन पाया,
स्मृति के सुमनों से
पूरा सजाया।

:: 13 ::
मैंने बसाये
मन के नगर में
यादों के घर।

:: 14 ::
विषैली कील
अटक जाती मेरी
यादों की रील।

:: 15 ::
सखी-सहेली
सावन वाले झूले
कभी न भूले।

:: 16 ::
यादों का गाँव
रुनझुन पायल
कोमल पाँव।

:: 17 ::
अश्रु नहीं ये
बूढ़े नयनों की हैं
धुँधली यादें।

:: 18 ::
नयन मूँद
बचपन में झाँका
खुद को आँका।

:: 19 ::
एक ही पल
दृश्यों से भर जाता
स्मृति-पटल।

:: 20 ::
पूरी कहानी
एक धागे में बँधी
यादें पुरानी।

:: 21 ::
बिन्दु से बिन्दु
जोड़-जोड़ बनता
स्मृति का सिन्धु।

:: 22 ::
जीवन लाए
यादों के घहराए
बादल आए।

:: 23 ::
बनते गीत
स्मृति को जन्म देता
मेरा अतीत।

:: 24 ::
स्वर हैं मौन
चित्त में चमकती
यादों की कौंध!

:: 25 ::
भूलने पर
और आने लगती
उसकी याद!

:: 26 ::
चाँदनी संग
आज उतरी याद
बरसों बाद!

:: 27 ::
आती है याद
जो भी अमूल्य होता
खोने के बाद!

:: 28 ::
ज़िन्दगी भर
कुछ पलों की बात
रहती साथ!

:: 29 ::
जागते-सोते
याद करता दिल
नयन रोते!

:: 30 ::
वे मेरे मीत
चित्त में छपे हुए
जिनके गीत!

:: 31 ::
बसी हुई थी
उन बूढ़ी आँखों में
याद हमारी।

:: 32 ::
यह क्या होता
याद करते हम
हृदय रोता?

:: 33 ::
गिनती रही
उम्र की क़िताब में
यादों के पन्ने!

:: 34 ::
बहुत खोया,
ज़िन्दगी में शेष हैं-
यादें ही यादें!

:: 35 ::
चली अकेली
साथ लिये यादों की
दीपक - थाली!

:: 36 ::
उम्र ढले तो
यादों का खण्डहर
जीने लगता।

:: 37 ::
जैसे बसती
सुरभि सुमन में,
स्मृति मन में।

:: 38 ::
मैं हूँ विभोर
नाप नहीं सकती
स्मृति की डोर। ❑

डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव

:: 1 ::
बीते वे दिन
बीत गईं वे रातें
बची हैं यादें।

:: 2 ::
तुमने दिया
प्रीति का जो गुलाब
ताज़ा रहेगा।

:: 3 ::
आया वसन्त
मंजरियों में बसी
तेरी सुगन्ध।

:: 4 ::
राहें अँधेरी
कर रहा रौशन
स्मृति का दीप।

:: 5 ::
तुम हो कहाँ
दे रहा आवाज़ है
मन - पपीहा।

:: 6 ::
गाँव मुझको
ढूँढ़ता, मैं गाँव को
खो गए दोनों।

:: 7 ::
खोज लूँगा मैं
गाँव की गलियों में
खोया शैशव।

:: 8 ::
देता आवाज़
गाँव का वो आँगन
उलझे कहाँ? ❑

डॉ. गोपाल बाबू शर्मा

:: 1 ::
तपती छाँव
पनघट उदास
कहाँ वे गाँव?

:: 2 ::
झींकना-रोना
अब तो रह गया,
रिश्तों का ढोना।

:: 3 ::
धूप भी छाँव
बन गई हमको
तुम्हारे गाँव।

:: 4 ::
आकुल मन
भर-भर आते ज्यों,
यादों के घन।

:: 5 ::
भीगती शाम
साथ-साथ लिखे थे,
पेड़ों पे नाम।

:: 6 ::
नदी समीप
मन बैठा तैराता,
सुधि के दीप।

:: 7 ::
फूली सरसों
खेतों में देखे बिन
बीते बरसों।

:: 8 ::
दीजिए बता-
भीगी हुई आँखों को
हँसी का पता। ❑

(मोती कच्चे धागे में, सन् 2004
से साभार)

डॉ. उर्मिला अग्रवाल

:: 1 ::
यादों के फूल
खिल उठे मन में
सुरभि व्यापी।

:: 2 ::
उजास फैली
भोर किरन नहीं,
तेरी याद थी।

:: 3 ::
तनहाई में
भर जाती मिठास
तुम्हारी याद।

:: 4 ::
फैला उजाला
विहँस उठीं यादें
फिर तुम्हारी।

:: 5 ::
सुवासित है
जीवन की बगिया
स्मृति-पुष्पों से।

:: 6 ::
प्रीत की यादें
समेट ही लेती हैं
बिखरा मन।

:: 7 ::
जम के बैठीं
प्रेम पगी स्मृतियाँ
मन - कुटिया।

:: 8 ::
सीले-से दिन
चमके हैं जुगनू
तेरी याद के।

:: 9 ::
खाली था मन
चली आईं सुधियाँ,
डेरा जमाने।

:: 10 ::
कैसे समेटूँ
यादें भरीं मन में
बेतरतीब।

:: 11 ::
छलिया याद
प्राणों में कसकती
कंटक बन।

:: 12 ::
रोज़ रुलातीं
तीखी-कड़वी यादें
चीरती जातीं।

:: 13 ::
संभव है क्या?
तुम्हारी स्मृतियों से
मेरी विदाई?

:: 14 ::
यादों की गंध
बेचैन हो उठा है
मधुप-मन।

:: 15 ::
कान्हा की यादें
सिसकी भर रहा
राधा का मन।

:: 16 ::
जब-जब भी
जग ने बहकाया,
तू याद आया।

:: 17 ::
मन-मंदिर
तेरी यादों का दिया
जलता रहा।

:: 18 ::
चाँदनी रात
डबडबाई आँखें
तुम्हारी यादें।

:: 19 ::
मन - आसमाँ
कोहरे की चादर
तुम्हारी याद।

:: 20 ::
तुम्हारी यादें
गुनगुनाती रहीं
विरह-गीत। ❑

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

:: 1 ::
दूर नभ में
चुप तारा अकेला
खोजे मीत को।

:: 2 ::
छाई उदासी
मन-मरुभूमि में
अँखियाँ प्यासी।

:: 3 ::
बाट है सूनी
नहीं आया बटोही
व्यथा है दूनी।

:: 4 ::
कुछ न सूझे
गुमसुम आँगन
भीगा है मन।

:: 5 ::
नहीं कुसूर
हम हैं कोसों दूर
मन के पास।

:: 6 ::
यादें पखेरू
डरें दुबकें नीड़
चुगते चैन।

:: 7 ::
भोर न भाई
जिस दिन भी तेरी
याद न आई।

:: 8 ::
संझा - जीवन
बनीं यादें तुम्हारी
मन्दिर बाती।

:: 9 ::
कोकिल - पीर
चुभें यादों के तीर
बरसे नीर।

:: 10 ::
तुम्हारी याद
अँधेरे में दीप-सी
रही आबाद।

:: 11 ::
आतप-मन
नीम की छाँव बनी
तेरी वो याद।

:: 12 ::
नदी का तीर
सपनों में आकर
देता है पीर।

:: 13 ::
छूट गई वो
बौराई अमराई
छूटी लुनाई।

:: 14 ::
नयन जल
सुधियों-भरा ताल
गया छलक।

:: 15 ::
टेरती रहीं
हिलते रूमाल-सी
व्याकुल यादें।

:: 16 ::
झुके नयन
मधुर कथा कहें
स्मित अधर।

:: 17 ::
पुरानी बातें
भाई याद दिलाए
बहना भूले।

:: 18 ::
समेटा गया -
न सुधियों का जाल
सिहरा ताल।

:: 19 ::
छोटी-सी चूक
अधूरा-सा जीवन
बाकी थी हूक।

:: 20 ::
बीते बरसों
अभी तक मन में
खिली सरसों।

:: 21 ::
मन की मीन
सुधियों-सी घिरती
रही तिरती।

:: 22 ::
व्याकुल मन
दो पल का मिलन-
यही जीवन।

:: 23 ::
पोंछो ये पलकें,
मोतियों भरे हैं ये
सागर छलके।

:: 24 ::
बेबस हुए
आँखें डबडबाईं
याद जो आई।

:: 25 ::
धुले रूप-सी
गुनगुनी धूप-सी
यादें तुम्हारी।

:: 26 ::
पाखी मन के
जीवन-आँगन के
मिल न पाते।

:: 27 ::
मिली न पाती
सिसके रात भर
बिछुड़ा साथी।

:: 28 ::
पता है खोया
कैसे भेजूँ संदेसा
मन था रोया।

:: 29 ::
बँधती नहीं
कभी किसी पाश में
आवारा यादें।

:: 30 ::
धोना पड़े जो
कभी मन-आँगन
यादें बचाना।

:: 31 ::
यादें हैं दिया
दिल के अँधेरों में
उजाला करें।

:: 32 ::
लौटते नहीं
बीते हुए वे पल
खो गए कल।

:: 33 ::
झील उफनी
जब बिसरी यादें
घिरीं - बरसीं।

:: 34 ::
भीगी बाती-सी
करती उजियारा
यादें सुहानी।

:: 35 ::
छुआ तो झरीं
नाज़ुक पाँखुरी-सी
यादें पुरानी।

:: 36 ::
मन-मरु को
तरबतर करें
पनीली यादें।

:: 37 ::
तरस उठीं
नदी बन उमड़ीं
बिछुड़ी यादें।

:: 38 ::
रहे आबाद
सातों जनम तक
तेरी ही याद। ❑

डॉ. भावना कुँअर

:: 1 ::
दूर है पथ
थककर हैं सोए
यादों के पाखी।

:: 2 ::
पागल हवा
उड़ाकर ले आई
यादों के ख़त।

:: 3 ::
मुड़ा-सा पन्ना
कह गया कहानी
वर्षों पुरानी।

:: 4 ::
खूब ही कातें
चरखा ये यादों का
सूनी सी रातें।

:: 5 ::
लिपटी मिलीं
सीले कपड़ों संग
नरम यादें।

:: 6 ::
कोहरे जैसी
फैलती ही गईं वो
सर्द-सी यादें।

:: 7 ::
फाड़ते देखा
पुरानी तस्वीरों से
बीता वो कल।

:: 8 ::
खाए जो धोखे
यादों की कश्तियाँ ले
चुप निकले।

:: 9 ::
नन्हीं बच्ची-सी
कुनमुनाईं हठी
चंचल यादें।

:: 10 ::
दौड़ती आई
चंचल हिरणी-सी
याद तुम्हारी।

:: 11 ::
ओस सजाती
हरियाली के माथे
यादों के मोती।

:: 12 ::
यादों की कश्ती
पीड़ा के सागर में
डूबी - उतरी।

:: 13 ::
समाए बैठी
दीवारों की दरारें
आँसू की नमी।

:: 14 ::
ओढ़के सोई
विरह की रातों में
यादों की लोई।

:: 15 ::
मिटा न पाए
ज़ख़्म, जो दिए तूने
सिलते जाएँ।

:: 16 ::
मैंने छिपाए
तस्वीरों में जो ख़त
कौन चुराए?

:: 17 ::
यादों की थाती
मन के अँधेरों पे
काबू पा जाती।

:: 18 ::
बसाया मैंने
यादों - भरा नगर
तुझे खोकर।

:: 19 ::
यादों के मृग
जलते मन पर
छोड़ें फफोले।

:: 20 ::
ऐसी भड़कीं
यादों की चिंगारियाँ
झुलसा मन।

:: 21 ::
स्मृति उकेरे
खौफ़नाक वक़्त के
डरे चेहरे।

:: 22 ::
सुधियाँ जागीं
तिरस्कृत रही मैं
बनी अभागी।

:: 23 ::
मन - गठरी
छटपटाती यादें
निकल भागें।

:: 24 ::
चिकनी रेत
फिसल गईं यादें
मीन के जैसे।

:: 25 ::
सूखे पत्ते-सी
चूर-चूर बिखरी
सहेजीं यादें।

:: 26 ::
घुलती रही
साँसों में रातभर
यादों की गंध।

:: 27 ::
सँजो के रखीं
यादों की कतरनें
तकियों पर।

:: 28 ::
सावन आये
पर मन का कोना
सूखा ही जाए।

:: 29 ::
खूब सताएँ
यादों के ये तीतर
हाथ न आएँ।

:: 30 ::
यादों के पाखी
आए जब मिलने
सोया था मन।

:: 31 ::
उड़ान भरे,
जब याद - परिंदा
रहे न ज़िंदा।

:: 32 ::
राह तकते
पलकें करें बात
सारी ही रात।

:: 33 ::
बनजारे-से
मतवाले ये नैन
छीनते चैन।

:: 34 ::
यादों की जब
चुनरी लहराई
फूटी रुलाई।

:: 35 ::
यूँ खोलो मत
भूली-बिसरी हुई
यादों के ख़त।

:: 36 ::
दर्द का रथ
आहों से भरे ज़ख़्म
खींचते रहे।

:: 37 ::
मन के द्वार
यादें देतीं दस्तक
महके प्यार।

:: 38 ::
अपनी यादें
सितारे बनाकर
टाँक दी मैंने। ❑

डॉ. हरदीप कौर सन्धु

:: 1 ::
तोतले दिन
जिस संग बिताए
यादों में आए।

:: 2 ::
यादों में आना
पीठ थपथपाना
लगे सुहाना।

:: 3 ::
चले गए यूँ
कोसों दूर हमसे
यादों में मिलें।

:: 4 ::
याद उनकी
हर पल है आती
बड़ा रुलाती।

:: 5 ::
याद तुम्हारी
थामती भँवर में
नाव जो डोले।

:: 6 ::
बिखरी यादें
मन के आँगन में
अमोल हीरे।

:: 7 ::
पाखी हैं यादें
मन खुला आसमाँ
उड़ीं ये कहाँ।

:: 8 ::
ज़िन्दगी भर
यादें बन मौसम
हैं आती-जातीं।

:: 9 ::
संदेसा पाया -
इठलाती हवा में
तू याद आया।

:: 10 ::
गाँव की यादें
बसे मन - आँगन
ज्यों हो गहना।

:: 11 ::
जीने का मज़ा
ढूँढने जो निकले
यादों में पाया।

:: 12 ::
ज्यों ही निकले
यादों के सफ़र पे
मिला सुकून।

:: 13 ::
तितली बन
फूलों-लदे मन में
यादें नाचतीं।

:: 14 ::
पलों में मिटे
जब यादें हों पास
रूह की प्यास।

:: 15 ::
मन में आज
सुगंध में लिपटीं
कोमल यादें।

:: 16 ::
याद किशोरी
मन-खिड़की खोल
करें कलोल।

:: 17 ::
अति विचित्र
ये यादों का संसार
प्यार ही प्यार।

:: 18 ::
मिसरी-डली
बचपन-सहेली
यादों में मिली।

:: 19 ::
यादें हैं मीत
मन की शहनाई
गाती है गीत।

:: 20 ::
फूल-सी यादें
लो हुई बरसात
मन के बाग।

:: 21 ::
थका ये मन
ले यादों का तकिया
जी भर सोया।

:: 22 ::
याद अकेली
चली आई लुभाती
मन की गली।

:: 23 ::
याद यूँ आया
तोतला बचपन
देख खिलौने।

:: 24 ::
मन पहुँच-
यादों के पंख लगा
गाँव - आँगन।

:: 25 ::
ठंडक मिली
आया जब यादों का
नाज़ुक झोंका।

:: 26 ::
यादों की भट्टी
जलता दुखी मन
तपे बदन।

:: 27 ::
पगती रही
यूँ रूह की खुराक
यादों के चूल्हे।

:: 28 ::
निकली आज
लो यादों की बारात
मिली सौगात।

:: 29 ::
यादों के संग
छलकीं ये अँखियाँ
कैसा सावन!

:: 30 ::
यादों के रंग
भिगोए न दामन
भीगता मन।

:: 31 ::
बहुत ढूँढ़ा
यादों में जो बसता
वो गाँव मेरा।

:: 32 ::
भूल न पाया
जब-जब साँस ली
तू याद आया।

:: 33 ::
तुम्हारी यादें
दिए दिल के जख़्म
कभी न भरें।

:: 34 ::
मन त्रिंजण
लो तेरी याद आई
हँसी तन्हाई।

:: 35 ::
चिड़िया तोते
ओटे छपी मूरतें
चहकी यादें।

:: 36 ::
रौशन मन
टिमटिमाई याद
जुगनू बन।

:: 37 ::
शिशु-सा मन
खिलखिलाता झूले,
यादों का झूला।

:: 38 ::
यादों की छड़ी
मन-आँगन खड़ी
ले सोन परी। ❑

डॉ. सतीशराज पुष्करणा

:: 1 ::
क्या वे दिन थे!
सच कह पाते थे,
अब सज़ा है।

:: 2 ::
यादों में आते
बगीचे हरे-भरे,
अब स्वप्न हैं।

:: 3 ::
गर्मी के दिन,
झुलस गए पाँव
याद है छाँव।

:: 4 ::
तुम्हारी याद
जब-तब आकर
करती बात।

:: 5 ::
अधर मौन
फिर भी हुई बात
आज भी याद।

:: 6 ::
माँ की आवाज़-
मन्दिर की घण्टी-सा
पावन राग।

:: 7 ::
कल का कुआँ
वहाँ आज देखता
पानी भी बिका!

:: 8 ::
गाँव के बीच
दादा-सा बरगद
यादों में बसा।

:: 9 ::
भाई था भुजा
जाने से उसके मैं
अकेला हुआ।

:: 10 ::
बुरे वक़्त में
मीत का छोड़ जाना
भूल न पाया।

:: 11 ::
किताब खोली
सूखे फूलों मे दिखा
बीता यौवन।

:: 12 ::
पाया न जिसे
वो पूनम का चाँद
आँखों में छाया।

:: 13 ::
आँखें ढूँढ़तीं
जिसने बदल दी
मेरी ज़िन्दगी।

:: 14 ::
रेत का घर
कभी तोड़ा, बनाया
भूल न पाया। ❑

चन्द्रबली शर्मा

:: 1 ::
बादल आए
झमाझम बरसे
भिगो न पाए।

:: 2 ::
चाँद-सितारे
कभी न हारे, हम
सदा ही हारे।

:: 3 ::
कोयल गाए
घायल मन मेरा
सुन न पाए।

:: 4 ::
धरती फटी
सीता जब समाई
न दी दिखाई

:: 5 ::
दिन फाख़्ता-से
वो कब उड़ गए!
जान न पाए।

:: 6 ::
बहा ले जाए
झरना सब संग
लौटा न पाए।

:: 7 ::
घना अँधेरा
ज्यों चमकी बिजली
रौशन मन।

:: 8 ::
गुलाब देख
जो मन ललचाया
कुटज पाया।

:: 9 ::
घुमड़ी यादें
चलती लेखनी भी
लिख न पाई।

:: 10 ::
यादों के पाखी
थक गए शायद
उड़ न पाएँ।

:: 11 ::
तपा सूरज
पिघल गया चाँद
छाया अँधेरा।

:: 12 ::
सोए सपने
सभी अपने, जागे
हुए बेगाने।

:: 13 ::
यादों की परी
चुरा ले गया कौन
आँखें भी मौन।

:: 14 ::
ढूँढता फिरे
यादों-भरी चाँदनी
आहत मन।

:: 15 ::
सालती रही
वो बर्फ़-सी चाँदनी
तन औ मन।

:: 16 ::
करता रहा
यादों से मनमानी
पागल मन।

:: 17 ::
तेज़ बारिश
बहा ले गई सब
यादों का रंग।

:: 18 ::
प्यार के आँसू
कहाँ अटक गए
जान न पाए।

:: 19 ::
पत्थर दिल
मोम बन पिघला
अब न गिला।

:: 20 ::
अँधेरी रात
झूमकर नाची थी
मधुर याद।

:: 21 ::
बिना बरसे
यादों के वो बादल
पिघले थे क्यों?

:: 22 ::
ऐसी छलकी
यादों भरी गगरी
फूटी, सिसकी। ❑

प्रगीत कुँअर

:: 1 ::
मन-परिंदा
यादों को अपने में
रखता ज़िंदा।

:: 2 ::
मन ले जाए
जहाँ मिलें उसको
यादों के साए।

:: 3 ::
यादों ने घेरा
हमको जब तक
हुआ अँधेरा।

:: 4 ::
मन बावला
यादों का कारवाँ ले
कहाँ है चला?

:: 5 ::
छाए उदासी
याद आए जब भी
बिछड़ा साथी।

:: 6 ::
हों जो अकेले
ढूँढे हैं तब हम
यादों के मेले।

:: 7 ::
भागे उदासी
उड़े हैं जब-जब
यादों के पाखी।

:: 8 ::
खोए हैं हम
यादों के सैलाब में
अँखियाँ नम।

:: 9 ::
मिलते हमें
यादों के सफ़र में
गुज़रे लम्हे।

:: 10 ::
सूरज उगा
सुनहरी यादों का,
अँधेरा भगा।

:: 11 ::
तन्हा हों जब,
खिड़की से झाँकते
यादों के खग।

:: 12 ::
भरें उड़ान
यादों के आसमाँ में
मिटे थकान।

:: 13 ::
यादें बेचारी
मन की गलियों में
फिरती मारी।

:: 14 ::
पहुँचाएँगे,
यादों के सेतु अब
मंज़िल तक।

:: 15 ::
टूटता गया,
यादों के भँवर में
डूबता गया।

:: 16 ::
यादों की लता
मन के आँगन में
फैलती सदा।

:: 17 ::
चुराए मैंने
यादों के झरने से
गुज़रे पल।

:: 18 ::
यादों के दिए
मन के अँधेरों को
रौशन किए।

:: 19 ::
आँखें बेचारी
अब तक हैं ढोती
यादें तुम्हारी।

:: 20 ::
अँखियाँ भोली
उठाए फिरती हैं
यादों की डोली।

:: 21 ::
पिरोएँ हम
वक़्त की सुई-संग
यादों के रंग।

:: 22 ::
कर देता है
वक़्त का मरहम
यादों को कम।

:: 23 ::
हँसती यादें
हम पर अक्सर
चुभा नश्तर।

:: 24 ::
मुश्किल बड़ा
यूँ दिल को मनाना
यादें भुलाना।

:: 25 ::
घड़ी के काँटे
वक़्त के आँचल में
यादों को टाँके।

:: 26 ::
फँसते सभी
यादों के भँवर में
कभी न कभी।

:: 27 ::
मन हमारा
संग लिये यादों को
घूमे आवारा।

:: 28 ::
ढूँढे हमने
मन के अँधेरों से
गुज़रे लम्हे।

:: 29 ::
फूट के रोये
यादों के आँचल को
आँसू भिगोये।

:: 30 ::
चिट्ठी न ख़त
चली आती हैं यादें
अनवरत।

:: 31 ::
शाम की बेला
फिर होगा रौशन
यादों का मेला।

:: 32 ::
सूनी अखियाँ
ख्वाबों में यादों संग
करें बतियाँ।

:: 33 ::
हदों को फाँदें
दिल के झरोखे से
झाँकती यादें।

:: 34 ::
फिरते अब
मन के जंगल में
यादों के मृग। ❑

रचना श्रीवास्तव

:: 1 ::
एक था पत्ता
टूटा जब डाल से,
जुड़ न सका।

:: 2 ::
तुम्हारी याद
एक बंद खज़ाना
दिल में मेरे।

:: 3 ::
स्मृति की डाल
सहलाती दर्द को,
बहते अश्रु।

:: 4 ::
भूली तारीख
तिरता कोई गीत
दिलाता याद।

:: 5 ::
ताखे निशानी
खूँटी पे टँगी याद
रुलाती मुझे।

:: 6 ::
यादों की नाव
हर वक़्त तैरती
दिल - दरिया।

:: 7 ::
बाँधा था मैंने
कसके पोटली में
याद - पुलिंदा।

:: 8 ::
मुड़ा पड़ा था
जंग लगे बक्से में
पुराना वक़्त।

:: 9 ::
झाड़ी धूल तो
याद उठके बोली-
'क्यों भूले मुझे?'

:: 10 ::
आँसू से लिखी
वो चिट्ठी जब खोली,
भीगी हथेली।

:: 11 ::
यादों के दंश
जीवित रखने को
कुरेदे ज़ख़्म।

:: 12 ::
ढूँढ़े वो शब्द
पुराने बण्डल से,
तुमने भेजे।

:: 13 ::
यादों के बीज
बोए हथेली पर
उगी फ़सल।

:: 14 ::
माँ खोलती है
जब यादों का बक्सा
थोड़ा जी लेती।

:: 15 ::
धोए तुमने
रहे फिर भी बाकी
स्मृति के चिह्न।

:: 16 ::
माँ की आँखें
सावन-सी बरसें
तेरे जाने से।

:: 17 ::
तेरे खिलौने
चिपका के सो जाती
रोते-रोते माँ।

:: 18 ::
तुम्हारे शब्द
याद-अरगनी पे
सुखाती है माँ।

:: 19 ::
गिरे गलों पे,
निकलके आँखों से
यादों के मोती।

:: 20 ::
चुभती रही
पलकों पे ठहरी
याद तुम्हारी।

:: 21 ::
याद का मोती
मैं पिरोऊँ माला में
महक जाऊँ।

:: 22 ::
भरूँ मै पानी
याद के मटके में
बहता जाए।

:: 23 ::
याद - सुनामी
उजाड़े वजूद को
बटोरूँ सदा।

:: 24 ::
यादों का घर
अँधेरा या पूनम
चमके सदा।

:: 25 ::
मन-कालीन
याद-धागों से बुना
उधेड़ूँ आज।

:: 26 ::
याद - जुगनू
सजे जरदोज़ी-से
मन-नभ पे।

:: 27 ::
याद - बादल
छाये मन-आँगन
बरसे नैन।

:: 28 ::
तेरी याद में
चारों मास बरसे
बावरे नैन।

:: 29 ::
चीनी के जैसी
चाय में घुल जाती
मीठी सी याद।

:: 30 ::
होने न दिया
यादों के जुगनू ने
कभी अँधेरा। ❑

कमला निखुर्पा

:: 1 ::
मन की झील
यादों की कंकड़िया
उठी लहर।

:: 2 ::
यादों के मोती
बिखेरूँ औ पिरोऊँ
हार सजाऊँ।

:: 3 ::
बंद पलकें
खोलें मन के द्वार
यादें हज़ार।

:: 4 ::
कभी हँसाएँ
रुलाके मार डालें
निगोड़ी यादें।

:: 5 ::
तनहाई में
मेरे सूने मन की
सहेली यादें।

:: 6 ::
अनकही-सी
उलझी-उलझी-सी
पहेली यादें।

:: 7 ::
छलक उठे
दोनों नैनों के ताल
मन बेहाल।

:: 8 ::
भीगी पलकें
नयनों के प्याले में
सिन्धु छलके।

:: 9 ::
तेरी दुआएँ
जीवन के मरु में
ठण्डी हवाएँ।

:: 10 ::
वो प्यारी आँखें
वो आँसू की लकीरें
मन को चीरें।

:: 11 ::
दु:ख की आँच
उठे यादों का धुआँ
जले है मन।

:: 12 ::
पलकें उठीं
होंठ कँपकँपाए
कह ना पाए।

:: 13 ::
बनपाखी-सी
उड़-उड़ आए हैं
यादें तुम्हारी।

:: 14 ::
तिनके सजा
नीड़ जब बनाऊँ
तुम्हें पुकारूँ।

:: 15 ::
पाँखुरी यादें
बिखरा जाऊँगी मैं
चुन लेना तू।

:: 16 ::
उड़े सपने
सुरमई आँखों के
यादें हैं जागी।

:: 17 ::
गूँजती रही
यादों की बाँसुरी
मन के तीर।

:: 18 ::
छुपो न तुम
अँखियाँ मींचकर
आँचल-ओट।

:: 19 ::
साँझ की नदी
क्यों कल-कल गाए
यादों के गीत।

:: 20 ::
मन का कोना
रहे न कभी सूना
यादों के बिना।

:: 21 ::
बिन पुकारे
आएँगी दौड़ी-दौड़ी
यादें निगोड़ी।

:: 22 ::
कहीं भी जाऊँ
परछाई-सी साथ
यादें तुम्हारी। ❑

डॉ. जेन्नी शबनम

:: 1 ::
आई है याद
जो छूटे थे हमसे
बरसों बाद!

:: 2 ::
उसकी यादें
खींच कर ले आईं
जो थीं भुलाईं!

:: 3 ::
पीहर छूटा
बचपन भी रूठा
याद रुलाए!

:: 4 ::
सपने आए
रोज़-रोज़ बुलाए
बूढ़ा पीपल!

:: 5 ::
बीती सदियाँ
लुका-छिपी थी खेली
सखियों - संग!

:: 6 ::
फिर से दौड़ूँ
गुल्ली-डंडे से खेलूँ
मनवा चाहे!

:: 7 ::
कौन बुलाए!
बाबुल की गलियाँ
बाबा न अम्मा!

:: 8 ::
सफेद फूल
चादर-सी थी बिछी
बाबा की अर्थी!

:: 9 ::
बड़ा सताया
गुज़रा हुआ वक़्त
याद जो आया!

:: 10 ::
किसे सुनाएँ
दु:ख भरी कहानी
बिछुड़ा साथी!

:: 11 ::
मन की ऋतु
यादों को बहलाए
स्वप्न दिखाए!

:: 12 ::
हुई विलीन
अम्मा की जलपरी
जग में लीन!

:: 13 ::
भीगा था मन
यादों की बारिश में
बरसों बाद!

:: 14 ::
खुली पिटारी
जहाँ-तहाँ वो गिरीं
यादें बिखरीं!

:: 15
यादें रिसतीं
ज़ख़्म है पिघलता
व्याकुल मन!

:: 16 ::
गतिशीलता
जीवन का सफ़र
यादें पड़ाव!

:: 17 ::
तुम्हारी यादें
भोर में गुम होतीं
ओस-कणों-सी!

:: 18 ::
यादें उगतीं
तय वक़्त पर, ज्यों
मौसमी फूल!

:: 19 ::
नहीं फ़ुर्सत
जिंदगी आपा-धापी
यादें दफ़न!

:: 20 ::
बड़ा गहरा
अतीत का पहरा
आज रुलाता!

:: 21 ::
साझा सफ़र
यादें भी तो थीं साझी
फिर तन्हा क्यों?

:: 22 ::
बाहर झाँका
दिखे गुज़रे पल
यादें झरोखा!

:: 23 ::
यादों का थान
तह खुली तनिक
वक़्त बिखरा।

:: 24 ::
कुछ मौसम
फूलों से हैं खिलते
याद दिलाते!

:: 25 ::
यकीन नहीं
खुद की यादों पर
क्या मैं हूँ वही?

:: 26 ::
सुख-दुःख की
लहरें मचलतीं
यादें सागर।

:: 27 ::
यादें बिखरी
छोटी-सी कील चुभी
यादें गुब्बारा!

:: 28 ::
सहेज ली हैं
मन की पोटली में
चंचल यादें!

:: 29 ::
सुहाने पल
फिर से याद आए
मन हर्षाए!

:: 30 ::
जब वो उड़ीं
ठहरती ही नहीं
यादें पखेरू! ❑

सुशीला शिवराण

:: 1 ::
माँ का आँचल
ममता की वो छाँव
स्वर्ग-सी लगे!

:: 2 ::
पिता की गोद
प्यार और दुलार
सुख अपार।

:: 3 ::
हवेली - चौक
चार पीढ़ियाँ साथ
पलता प्यार!

:: 4 ::
विशाल वट
शाख हर्ष से फैले
पीढ़ियाँ खेलें।

:: 5 ::
वट की छाँव
पनघट-चौपड़
स्मृति की ठाँव।

:: 6 ::
सावन रुत
सखियाँ औ हिंडोले
मनवा डोले।

:: 7 ::
पड़े फुहार
पानी भरी तलैया
मन ता-थैया!

:: 8 ::
रेशम-तीज
वो रेत के घरौंदे
हा! बचपन!

:: 9 ::
हाथ ना सूझे
काली-पीली वो आँधी
छिपे माँ-गोद!

:: 10 ::
दुपहरी में
इमली के पेड़ पे
अपने डेरे!

:: 11 ::
छत - मुँडेर
कागा करे है काँव
आओ पाहुना!

:: 12 ::
चाँदनी रात
सीली-मंद बयार
थार-सौगात!

:: 13 ::
चढ़ाते पींग
जा बैठते मचान
यादें रुलाएँ!

:: 14 ::
नदी का पाट
वो घरौंदे बनाना!
आता है याद।

:: 15 ::
मन छलिया
दिखाए है सपने
चुभें किरचें!

:: 16 ::
तारा-चूनर
सीली रेत बिछौना
रही सुध ना!

:: 17 ::
उगे पंख जो
ऊँची भरी उड़ान
नीरव नीड़।

:: 18 ::
बर्फ़ का गोला
जाग उठती गली
हाथ चवन्नी।

:: 19 ::
नदी का पाट
ऊँचे रेत के टिब्बे
खूब थे ठाठ।

:: 20 ::
देखके चुस्की
ललचा उठे है जी
भोला है दिल।

:: 21 ::
स्टापू, लँगड़ी
लुढ़के कुछ कंचे
यादों की गली!

:: 22 ::
रौशन जहाँ
उम्मीदों का दीप तू
खो गया कहाँ?

23
तुम जो नहीं
भरी महफ़िल में
सूना है मन।

24
तुम्हारे बिन
कतरा कर खुशी
कहती- विदा!

25
मन एकाकी
उड़ा है, बन पाखी
तेरी नगरी।

26
मन चंचल
लाख रोकूँ ,ना माने
तेरा ही ख्याल

27
यादों के पाखी
बना हृदय नीड़
दें घनी पीड़!

28
मन बावरा
ढूँढ़े शीतल छाँव
तप्त मरु में!

29
भूले हो तुम
कैसे भूलूँ जाऊँ मैं
अंशी हो मेरे!

30
तन्हा ही रहे
रिश्तों की भीड़ में भी
हम एकाकी! ❑

प्रियंका गुप्ता

:: 1 ::
तनहाइयाँ
बंद बक्सों में खोजें
यादें पुरानी।

:: 2 ::
अकेलापन
अक्सर ढूँढ़ लाता
कोई चुभन।

:: 3 ::
अम्मा की गोद
परियों की कहानी
यादें सुहानी।

:: 4 ::
सहला जातीं
गुनगुनी धूप-सी
पुरानी यादें।

:: 5 ::
बंद खिड़की
दरारों से झाँकती
यादें चोरटी।

:: 6 ::
महकीं फिर
गुलदस्तों में सजी
पुरानी यादें।

:: 7 ::
गद्दे के नीचे
पुराने कागज़-सी
दबी थी यादें।

:: 8 ::
परछाई-सी
सदा साथ चलतीं
हमारी यादें।

:: 9 ::
सूना आँगन
बाबुल याद करे
बेटी की हँसी।

:: 10 ::
मन की गर्द
झाड़ने पे निकलीं
धूमिल यादें।

:: 11 ::
खटखटाया
हौले से मन-द्वार
निकली यादें।

:: 12 ::
माँ का आँचल
जाने कैसे समेटे
इतनी यादें!

:: 13 ::
दादी ने छोड़ी
अनगिनत यादें
टूटे बक्से में।

:: 14 ::
दादी के घर
यहाँ-वहाँ बिखरी
कितनी यादें।

:: 15 ::
आँखों से झरे
दादी माँ समेटती
यादों के मोती।

:: 16 ::
बंद मुट्ठी से
रेत-सी झर गईं
कड़वी यादें।

:: 17 ::
यादों के पत्ते
पेड़ से जब झड़े
मिट्टी में दबे।

:: 18 ::
सब ही छीना
छीन न पाए यादें
दुश्मन मेरे।

:: 19 ::
यादों के पन्ने
आँसू से गीले हुए
तो भी न फटे।

:: 20 ::
आसान हुई
पथरीली राह भी
यादों के संग।

:: 21 ::
यादों के छींटे
तपे मन पे पड़े
ठण्डक मिली।

:: 22 ::
कुरेदे जब
फिर से हरे हुए
यादों के घाव।

:: 23 ::
सहेजे रही
अनमोल रत्न-सी
याद तुम्हारी।

:: 24 ::
बिखरे मोती
जतन से पिरोई
यादों की माला।

:: 25 ::
महक उठे
दिल के घरौंदे में
यादों के फूल।

:: 26 ::
यादों का साया
मन पे गहराया
दर्द ही पाया।

:: 27 ::
याद बनके
मन में रहा ज़िन्दा
प्यार तुम्हारा।

:: 28 ::
छूटी जो गली
जब लौट के आए
ढूँढ़े न मिली।

:: 29 ::
कड़ी थी धूप
सिर पर ओढ़ ली
याद - चुनरी। ❑

डॉ. अनीता कपूर

:: 1 ::
वो भीगी यादें
जब शब्दों में ढली
बनी कविता।

:: 2 ::
सिहर उठीं
कुहासे में लिपटीं
वो तल्ख यादें।

:: 3 ::
यादों की देह
कर रही ताण्डव
रुद्र-सी बन।

:: 4 ::
उधड़े रिश्ते
सीती हुई हमेशा
याद आती माँ।

:: 5 ::
सर्द सुबह
नर्म रूई-सी याद
धूप सेंकती।

:: 6 ::
यादें चुभती
जैसे गुलाब-काँटे
न रोपो इसे।

:: 7 ::
लौट गया वो
मैं खरोंचती रही,
उसकी यादें।

:: 8 ::
झाँकती यादें
मन-आँगन मेरे
जैसे जुगनू।

:: 9 ::
कड़वी यादें
छान ली आज मैंने
जैसे मिठास।

:: 10 ::
यादों की रेत
फिसले हर पल
पोर-पोर से।

:: 11 ::
टँगे सपने
यादों की अलगनी
रोए है मन।

:: 12 ::
यादों के साए
मौसमी नहीं होते,
सदाबहार।

:: 13 ::
अच्छा ही हुआ
उड़ी कड़वी यादें
पतझड़ में।

:: 14 ::
बरसे मेघा
मीठी यादों से भरे
मन-आँगन।

:: 15 ::
मुँह चिढ़ाता
वक्त जब हो जाता
बिसरी याद।

:: 16 ::
यादों का चाँद
मन के आकाश पे
चढ़े - उतरे।

:: 17 ::
यादों के ख़त
भटकते पहुँचे
बरसों बाद।

:: 18 ::
याद - खिलौना
खेलो इसके साथ
न पाओ ज़ख़्म।

:: 19 ::
दुख बढ़ाती
यादों की अनुभूति
कड़वी-मीठी

:: 20 ::
यादें भागतीं
कागज़ की सड़क
नज़्म बनने।

:: 21 ::
ओस-सी यादें
मन का दुखी फूल
और भिगोएँ।

:: 22 ::
अल्हड़ यादें
पहाड़ी झरने-सी
बहती जाएँ। ❑

डॉ. श्याम सुन्दर 'दीप्ति'

:: 1 ::
याद सफ़र
इक लम्बा पहर
कभी ठहर।

:: 2 ::
याद मौसम
सावन या बहार
दोस्त का प्यार।

:: 3 ::
याद बिजली
आकाश में चमकी
खुशी बरसी।

:: 4 ::
दर्द को भूल
खींच दिल से शूल
खिलेगा फूल।

:: 5 ::
याद न जाए
क्यों जाने दूँ इसको,
मेरा खज़ाना।

:: 6 ::
कोयल गाती
दूर से ही बुलाती
याद दिलाती।

:: 7 ::
याद कोयल
पिया-पिया बुलाए
मुझे सताए।

:: 8 ::
काले-सफेद
यादों में भरे रंग
मिली उमंग।

:: 9 ::
याद बारिश -
तन को भिगो जाए,
आग लगाए।

:: 10 ::
याद-पिंजरा
पंछी फडफ़ड़ाए
उड़ न पाए।

:: 11 ::
कैसे, क्योंकर?
याद सम्भालूँ तेरी
एक अँधेरी।

:: 12 ::
किसकी याद
बनी कोमल गान
मिली मुस्कान।

:: 13 ::
यादें अंगार
इतना पानी डाला!
बुझ न सकीं।

:: 14 ::
मन अकेला
यादें गुनगुनाए
पल जी जाए।

:: 15 ::
खुद ही हँसूँ
पागल कहलाऊँ
यादें बुलाऊँ।

:: 16 ::
भूला हूँ सब
याद एक है फँसी
तुम्हारी हँसी।

:: 17 ::
क्या मतलब
बेमतलब रोना
यादों में खोना।

:: 18 ::
यादों के पल
क्यों रखूँ समेट के
भीगा आँचल।

:: 19 ::
याद शूल-सी
जितना सहलाती
दर्द दे जाती।

:: 20 ::
यादों के पल
चुपके से पलते
साथ चलते।

:: 21 ::
याद खुशबू
साथ भी रहती
उड़ भी जाती। ❑

डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा

:: 1 ::
यादों की डोर
भीग-भीग जाए हैं
नयन - कोर।

:: 2 ::
हे पीताम्बर
यादों में तुम आए
वसंत लाए।

:: 3 ::
सखियाँ घूमें
सज-धज आऊँ मैं
माँ माथा चूमे।

:: 4 ::
पापा की प्यारी
एक सोपान चढ़े
हों बलिहारी।

:: 5 ::
राधा की यादें
अब तक ना भूलीं
कान्हा के वादे।

:: 6 ::
ब्याह रचाना
छोटे-छोटे बर्तन
बनाएँ खाना।

:: 7 ::
थोड़ा झगड़ा
ढेर सारा प्यार था
कैसे मैं भूलूँ!

:: 8 ::
माँ प्यार तेरा
जहाँ कहीं भी रहूँ
मेरा सवेरा।

:: 9 ::
पत्तियाँ नहीं
झरतीं किताबों से
यादें तुम्हारी।

:: 10 ::
राम लीलाएँ
भरत-राम मिलें
मुझे रुलाएँ।

:: 11 ::
यादों के मोती
अमानत उन्हीं की
सँभालें वही।

:: 12 ::
भागे हैं दिन
पढ़ी और पढ़ाया
बनी दुल्हन।

:: 13 ::
बहुत प्यारा
वो थाम लेना, वहाँ
हाथ तुम्हारा।

:: 14 ::
भुला ना सकी
स्नेह-सर अपार
भैया का प्यार।

:: 15 ::
मृदु यादों का
मधुर उपवन
महके मन!

:: 16 ::
कनी रेत की
सहे सीप में पीड़ा
बनेगी मोती।

:: 17 ::
काजल बहे
दिल के दर्द सारे
सबसे कहे।

:: 18 ::
आँखों के प्याले
कितने बहे, रहे-
दिल पे छाले।

:: 19 ::
कैसे गाऊँ मैं
तुम्हारे नमन के
गीत मन के।

:: 20 ::
निहारा तुम्हें,
जब भी याद आए,
पुकारा तुम्हें।

:: 21 ::
क्यों तरसाया?
प्यार हुआ पारा-सा
हाथ ना आया। ❑

रेखा रोहतगी

:: 1 ::
यादों के शब्द,
वक़्त के पन्नों पर
धुँधले पड़े।

:: 2 ::
यादों के तीर,
तन-मन बींधते,
घनेरी पीर।

:: 3 ::
रेशमी यादें,
जैसे कोमल स्पर्श
नन्हें हाथों का।

:: 4 ::
यादों की धारा,
ले गई बहाकर,
जीवन सारा।

:: 5 ::
यादों की हवा
छेड़ पत्ते ज़ख़्मों के,
कर दे हरा।

:: 6 ::
यादों के मेघ
जब-जब बरसे,
मन सरसे।

:: 7 ::
यादों के तीर,
चुभे रहे ताउम्र,
नैनों में नीर।

:: 8 ::
मन की करें,
घुसपैठिया यादें,
मन बेचारा!

:: 9 ::
यादें अंगारे,
जलती विरहन,
नैन - फव्वारे।

:: 10 ::
सुन आहट,
दबे पाँवों भागी हैं,
यादें कायर।

:: 11 ::
यादें सावन,
बरसे नेह-घन,
भिगोएँ मन। ❑

श्याम सुन्दर अग्रवाल

:: 1 ::
फ़ाइल खुली
पढ़ीं तेरी चिट्ठियाँ
रोया था मन।

:: 2 ::
दूध-चाँदनी
पड़ी कमल पर
तू याद आई।

:: 3 ::
घड़ी पुरानी
नहीं वक़्त बताती
बातें करती।

:: 4 ::
दौलत नहीं
धनवान बनाए
यादों की पूँजी।

:: 5 ::
तिड़का कप
टूटी ट्रे, मीठी चाय
बिन चीनी के

:: 6 ::
लिखा जो ख़त
तुम्हें पहुँचे कैसे
पता है खोया।

:: 7 ::
पीछा न छोड़ें
तेरी मधुर यादें
सपनों में भी।

:: 8 ::
याद आते हैं
कभी-कभी ही सही
बेवफ़ा लोग।

:: 9 ::
टूटी कलम
लिखे यादों की दास्ताँ
बिन स्याही के।

:: 10 ::
छिड़े जब भी
चर्चा बेवफ़ाई की
तू याद आए।

:: 11 ::
बहते आँसू
तेरे दिए दर्द की
कहें दास्तान।

:: 12 ::
पत्रिका खोली
प्रत्येक पन्ने पर
तेरा ही नाम।

:: 13 ::
याद भर से
गर्म-गर्म लगती
ठंडी रजाई।

:: 14 ::
दिल जो टूटा
बिखरा सब कुछ
बिन आवाज़। ❑

सुदर्शन रत्नाकर

:: 1 ::
साथ खेलना
पेड़ों पर झूलना
कैसे भूलूँ मैं?

:: 2 ::
पीपल-छाँव
मेरा अपना गाँव
कहाँ से लाऊँ?

:: 3 ::
परछाइयाँ
साथ-साथ चलतीं
बीते दिनों की।

:: 4 ::
कचोटती है,
जब याद आती है
वो बेवफ़ाई।

:: 5 ::
तेरी यादों को
रखा सँभालकर
जीवन भर।

:: 6 ::
बड़ा गहरा
है यादों का भँवर
निकलूँ कैसे ?

:: 7 ::
यादें तुम्हारी
धरोहर हैं मेरी
कैसे भूलूँ मैं?

:: 8 ::
भूले बिसरे
यादों के ये कारवाँ
साथ चलते।

:: 9 ::
कहीं भी जाऊँ
बिसरा न पाऊँ मैं
देश की माटी।

:: 10 ::
कल की बात
तुम थे मेरे साथ
आज भी याद। ❑

सुभाष नीरव

:: 1 ::
महक उठा
मन उपवन-सा
तेरी याद से।

:: 2 ::
यादों के पंछी
अतीत के वन में
हैं विचरते।

:: 3 ::
कड़वी-मीठी
हर याद समेटे
हम हैं जीते।

:: 4 ::
सँभाले रखा
उम्रभर खज़ाना
तेरी यादों का।

:: 5 ::
दूर भगाते
सूनापन मन का
पंछी यादों के।

:: 6 ::
महका जातीं
मेरा मन-आँगन
यादें तुम्हारी।

:: 7 ::
गुदगुदातीं,
कभी रुलातीं यादें
चुपके से आ।

:: 8 ::
जीवन मेरा
था सूखी धरती-सा
यादों ने सींचा।

:: 9 ::
जब भी हुआ
मैं बहुत अकेला
यादों ने घेरा।

:: 10 ::
मन-आँगन
खिले गुलमोहर
तेरी याद के।

:: 11 ::
तुम्हारी याद
दिन देखे ना रात
आ बैठे पास। ❑

मंजु मिश्रा

:: 1 ::
हँसे या रोएँ
जीवन की माटी में
यादें ही बोएँ।

:: 2 ::
आएँगी यूँ ही
जब-तब छलने
पुरानी यादें।

:: 3 ::
सूखे फूल-सी,
निकलीं किताबों में
पुरानी यादें।

:: 4 ::
झूमतीं, गातीं ,
उड़तीं, इठलातीं,
यादें तितली।

:: 5 ::
बीते जो पल
लौटे हज़ारों बार
बन के याद।

:: 6 ::
मुट्ठी बंद की
यादें समेटने को
हवा हो गईं।

:: 7 ::
रूठ गईं हैं
आँखों से सपनों-सी
छलिया यादें।

:: 8 ::
तेरी वो याद
चूड़ी-सी खनकी थी
बरसों बाद।

:: 9 ::
आँखों की कोर
यादों के मौसम में
भीगी ही रही।

:: 10 ::
याद तुम्हारी
पहाड़ी नदी बन
बहा ले गई।

:: 11 ::
याद, पेड़ की
चुनमुन चिरैया
फुर्र हो गई। ❑

राजेन्द्र मोहन त्रिवेदी 'बन्धु'

:: 1 ::
स्वप्न हो गया
पेड़ों पर झूलना
कजली गाना।

:: 2 ::
घर का बूढ़ा
दरवाज़े की शोभा
बट की छाया।

:: 3 ::
बूढ़ी आँखों में
लौट आतीं खुशियाँ
चिट्ठी जो आती।

:: 4 ::
सावन आते
सभी झूम उठते
झूले भी गाते।

:: 5 ::
कुएँ भरे थे
पनघट के गीत
सदा गूँजते।

:: 6 ::
कच्चे घर थे
पेड़ों से घिरा गाँव
ईंट हो गया।

:: 7 ::
गाँव था मेरा
कंक्रीट में खो गया
पेड़ न छाया।

:: 8 ::
ग़म एक का
पूरा गाँव उदास
जले न चूल्हे।

:: 9 ::
याद करके
बचपन की भूलें
हँस देता हूँ।

:: 10 ::
गाँव जो गए
ढहे खण्डहर भी
बोलने लगे। ❑

स्वाति भालोटिया

:: 1 ::
यादों के पाखी
लौट चले नीड़ को
रुकी ना रात।

:: 2 ::
तुम्हारी याद
दबे पाँव आती है
नींदें चुराने।

:: 3 ::
धुएँ के छल्ले
तुम्हारी सुलगाई
स्मृति-चिलम।

:: 4 ::
भारी-सी साँसें
हल्की पड़ी हैं यादें
बीते पलों की।

:: 5 ::
यादों की शॉल
काँपती रूह पर
ओढ़ मैं बैठी।

:: 6 ::
पुराना ख़त
यादों की दराज़ में
सँभाला हुआ।

:: 7 ::
ठंडी-सी रात
बरसती-उठती
यादों की भाप।

:: 8 ::
शाम की चाय
हर चुस्की में घुली
चीनी-सी याद।

:: 9 ::
छम से आया
यादों-भीगा सावन
सूखी आँखों में।

:: 10 ::
प्रिय की याद
आँखों की कोरों पर
मिलने आई।

:: 11 ::
ख़त तुम्हारे
रात के नभ पर
धूप की कूँची।

:: 12 ::
पढ़ लूँ फिर
बक्से की सफाई में
उनकी चिट्ठी।

:: 13 ::
निवाए हाथ
चित्त में शीतलता
वो माँ का स्पर्श।

:: 14 ::
केसरी बातें
चंपई-सी मुस्कान
माँ की खुशबू । ❑

डॉ. सरस्वती माथुर

:: 1 ::
यादें काँकर
गिरें मन-सागर
अक्स डोलते।

:: 2 ::
मन-सागर
छप-छप तिरती
यादों की नाव।

:: 3 ::
यादों की नाव
मझधार पहुँची
भँवर-घिरी।

:: 4 ::
यादें जो उड़ीं
अतीत नभ तक
घटा-सी तिरीं।

:: 5 ::
मन-तितली
यादों के फूलों पर
मँडराती-सी।

:: 6 ::
यादें अंकित
मन-कैनवास पे
तस्वीरों-जैसी।

:: 7 ::
शहनाई-सी
मन की दुनिया में
गूँजती यादें।

:: 8 ::
भटकी यादें
आवारा बादल-सी
बिन बरसे।

:: 9 ::
यादों का चाँद
खोये-खोये मन-सा
गगन चढ़ा।

:: 10 ::
आँसू के जैसी
यादें-पलकों-सजीं
थिर हो गईं।

:: 11 ::
मन पाखी-सा
यादों के पिंजरे में
फड़फड़ाए।

:: 12 ::
मन-डोर पे
पतंग-सी यादें
गगन उड़ीं।

:: 13 ::
भीगा मौसम
बीज-सी दबी यादें
अँखुवा गईं।

:: 14 ::
नन्ही चिड़िया
माँ की ममता जैसी
उड़ती जाती। ❑

प्रो. दविंद्र कौर सिद्धू

:: 1 ::
ओढ़ सपने
फूल खिला याद का
आशा के रंग।

:: 2 ::
कभी न आया
बीता वो बचपन
यादें ही आईं।

:: 3 ::
यादों के फूल
ज्यों सींचा आँसुओं से
खिलने लगे।

:: 4 ::
काली थी रातें
दिल दीपक बना
बाती थी यादें।

:: 5 ::
मन के मीत
दिल गुनगुनाए
यादों के गीत।

:: 6 ::
शीतलता-सी
नूरो-नूर फुहार
तेरी है याद।

:: 7 ::
अनोखा राग
आत्मा की ये हिलोर
तेरी है याद।

:: 8 ::
शेर बने हैं
यादों के सभी हर्फ़
दिल-पन्ने पे।

:: 9 ::
बीत चला यूँ
वक़्त का ये काफ़िला
यादें बेवफ़ा।

:: 10 ::
ज़िक्र तो आया
यूँ हर गुफ़्तगू में
वह न आया।

:: 11 ::
सिमरती हूँ
हर्फों की जो लौ बनी
उजाला करे। ❑

वरिन्दरजीत सिंह बराड़

:: 1 ::
भूल मैं जाऊँ
बनी यादें चुभन
चाहता मन।

:: 2 ::
यादें अमोल
दिल में हैं बसतीं
ज्यों मीठे बोल।

:: 3 ::
यादें बहतीं
बन आँख का पानी
दर्द-रवानी।

:: 4 ::
भस्म न हुईं,
लाख जलता रहा,
कड़वी यादें।

:: 5 ::
यादें बिखेरें
मन सौंधी खुशबू
भुला न पाऊँ।

:: 6 ::
मन में उड़ें
बचपन की यादें
ज्यों तितलियाँ।

:: 7 ::
खेला करते
संग नीम-निबौली
यूँ हमजोली।

:: 8 ::
यादों में आए-
डोर बेल बजाना
हाथ न आना।

:: 9 ::
यादों में आया -
चूल्हे भुने-भुट्टों का
स्वाद निराला।

:: 10 ::
यादों का कुआँ
हर पल उगले
गम का धुआँ।

:: 11 ::
यादें शर्मिंदा
अपने गैर बने
कैसे मैं ज़िन्दा। ❑

डॉ. मिथिलेशकुमारी मिश्र

:: 1 ::
यादें हैं आतीं
दिल से टकरातीं
हिला ही जातीं।

:: 2 ::
माँ की ममता
किसी भी पल-छिन
भूल न पाती।

:: 3 ::
माँ का मन्दिर
शान्त वातावरण
यादों में बसा।

:: 4 ::
बेटे का रूप
जब देखूँ, उनकी
याद दिलाए। ❑

डॉ. रमा द्विवेदी

:: 1 ::
नीम की छाँव
दादी-अम्मा का प्यार
सिर्फ़ सपना।

:: 2 ::
सपने बुने
अलगनी में पड़े
सूखते रहे।

:: 3 ::
बूढ़ी आँखों से
घन-घन बरसे
पूत न आए।

:: 4 ::
छूटीं न कभी
अतीत की स्मृतियाँ
सालती रहीं।

:: 5 ::
स्मृति के पत्ते
झर-झर झरते
जीवन रीते।

:: 6 ::
एक ही आस -
राखी के पर्व पर
भैया हों पास।

:: 7 ::
कण्ठ हो रुँधा
भैया से गले मिल
खुशियाँ झरें।

:: 8 ::
कुण्डली मिली
शहनाई की गूँज
करमजली।

:: 9 ::
अश्कों से बना
समंदर है भरा
नदी क्यों खाली? ❑

संगीता स्वरूप

:: 1 ::
सुकून मिला
तेरी यादों का टेसू
गमक गया।

:: 2 ::
अमलतास
खिला तेरा चेहरा
यादों में बसा।

:: 3 ::
यादों के साये
क्यों खींचते मुझको
जान न पाए।

:: 4 ::
रेशमी ख़्वाब
यादों का झुरमुट
नैनों में बसा।

:: 5 ::
छीला जो मैंने
यादों की फलियों को,
बिखरे दाने।

:: 6 ::
यादों की झील,
चाँद उतर आया,
मन हर्षाया।

:: 7 ::
यादें बुहारीं,
मन-आँगन लीपा,
ताज़गी आई।

:: 8 ::
खो जाती हूँ मैं
यादों के अरण्य में
डरे शिशु-सी।

:: 9 ::
तुम्हारी यादें
जुगनू बन आईं
रोशनी लाईं।

:: 10 ::
पारिजात-सी
महकती रही मैं
यादों में तेरी।

:: 11 ::
झाँका जो मैंने
यादों के दरीचे से

मुमताज टी एच खान

भर्राया मन। ❑

1
माँ तेरी याद
मन में हर पल
रही है साथ।

2
पूस की रातें
माँ की गोद के लिए
दौड़ लगाते।

3
याद है आती
कहानियाँ सुनाती
नानी की गोद।

4
पल वो याद
पिता का अचानक
छूटा था साथ।

5
रह गईं हैं
बस सपना बन
यादें तुम्हारी।

6
गाँव की नदी
लहरें जब आतीं
पाँव छू जातीं।

:: 7 ::
टूट चुका है
वो प्यारा-सा बसेरा
था जहाँ डेरा।

:: 8 ::
सुख-दु:ख में
निभाती रही साथ
यादें वो मीत।

:: 9 ::
हैं कुछ कही
हज़ारों अनकही
यादें हमारी। ❑

डॉ. उमेश महादोषी

:: 1 ::
ओस की बूँदें
मखमली घास पे
स्मृतियाँ ढूँढ़ें!

:: 2 ::
दिल में गड़ें
टूटे रिश्तों की जड़ें
दे जाएँ दर्द।

:: 3 ::
कभी तुम थे,
आज तुम्हारी यादें-
स्वप्न हमारे!

:: 4 ::
बौराये आम
सुगन्ध-भीगी शाम
यादों में बसी।

:: 5 ::
शिलाएँ बनीं
मन में बसी यादें
कौन शाप से!

:: 6 ::
अग्नि में जलीं
शीतल पवन-सी
बहती यादें।

:: 7 ::
दिन जो कटे
रोटी की तलाश में
स्मृति में बसे।

:: 8 ::
आग बरसी
झुलसी कल्पनाएँ
बची हैं यादें।

:: 9 ::
जलपरी-सी
क्रीड़ा-मग्न इच्छाएँ
यादों में आएँ। ❑

डॉ. अमिता कौण्डल

:: 1 ::
यादों के बाण
जब भी हैं चलते
घायल प्राण।

:: 2 ::
यादों ने बाँधा
दु:ख-कारावास में
छलनी दिल।

:: 3 ::
माँ! तेरी याद
बन जाती सहारा
हर बाधा में।

:: 4 ::
सरसों खिली
चाँदी-सा हिमालय
यादों में बसा।

:: 5 ::
पेड़ों पे झूले
गुड़ियों का विवाह
सुहानी यादें।

:: 6 ::
रात अकेली
सपने भी अँधेरे
बची ये यादें।

:: 7 ::
यादें गहना-
चंचल से मन का,
मैंने पहना।

:: 8 ::
पिता का प्यार
सुबह और साँझ
आता है याद ।

ऋता शेखर 'मधु'

:: 1 ::
मन- झरोखा
झाँककर जो देखा-
यादें थीं सोईं।

:: 2 ::
एकांत मिला
जग गईं वो यादें
गले से लगीं।

:: 3 ::
खिलखिलाता
वो बचपन मेरा,
आज भी भाता।

:: 4 ::
स्नेह-फुहार
था बुआ का वो प्यार-
मीठी बयार।

:: 5 ::
भाव-बदरा
नयनों से बरसे
सागर बने।

:: 6 ::
सँजोई यादो!
देती हूँ निमन्त्रण
आती रहना। ❑

सीमा स्मृति

:: 1 ::
कहीं तस्वीर
कहीं दिल में कैद
यादें दीवानी।

:: 2 ::
सरकंडों-सी
चुभें, कभी फाहा हो
सोखतीं दर्द।

:: 3 ::
चुने जो फूल
अँजुरी भर लाई
हुए ये शूल।

:: 4 ::
मिश्री-सी मीठी
निबौरी सी-कड़वी
अनंत यादें।

:: 5 ::
शब्दों की सीमा
पाट नहीं पाती ये
यादों की नदी।

:: 6 ::
सपना बन
बहती रात भर
बन संगिनी।

:: 7 ::
ये मँडराती
नटखट भौंरे-सी
जीवन-डाली।

:: 8 ::
निर्झर बन
निकल पड़ी मीलों
रोके ना रुकी।

:: 9 ::
बरगद-सी
फैली है चारों ओर
विकट रूप।

:: 10 ::
पंछी-सी उड़ें
यादें कब होती हैं
तहों में कैद। ❑

भावना सक्सेना

:: 1 ::
बरसों बीते
गाँव की गलियाँ
नाम पूछतीं।

:: 2 ::
धूप-साँझ की
सींचतीं अन्तर्मन
यादें जीवन।

:: 3 ::
गुड़िया-गुड्डा
अंकित मन पर
खेल पुराने।

:: 4 ::
मन का पाखी
उड़े होके बेकाबू
तन में कैद।

:: 5 ::
दादी का लड्डू
बाबा की रजाई
हुई पराई।

:: 6 ::
नर्म आँचल
गुनगुनी धूप-सी
माँ की ममता। ❑

कृष्णा वर्मा

:: 1 ::
भीनी-सी यादें
होठों को दें मुस्कान
प्यारे पलों की।

:: 2 ::
यादों का कोश
तन्हाई का सहारा
आयु पर्यन्त।

:: 3 ::
स्मृति-चिह्नों को
रूमाल में सहेज
रखा है मैंने।

:: 4 ::
यादों में आके
मेरे मन के घाव
सहलाती माँ।

:: 5 ::
बाहों का झूला
काँधे पर सवारी
यादें हैं प्यारी।

:: 6 ::
याद में जली
अगरबत्ती-सम
राख में ढली।

:: 7 ::
छलें नींद को
कसमसाएँ जब
सीने में यादें।

:: 8 ::
याद तुम्हारी
साँसों संग थिरके
सरगम-सी।

:: 9 ::
यादों की ओट
रखती प्रज्वलित
जीवन जोत।

:: 10 ::
नन्हा-सा उर
यादों-भरा सागर
नित मंथन।

:: 11 ::
झरते आँसू
मोतियों-सा तोलता
प्यार तुम्हारा।

:: 12 ::
दूर बसे हो
यादों के झरोखों से
नित्य निहारूँ।

:: 13 ::
याद तुम्हारी
आँखों के कोरों पर
आँसू की बूँद।

:: 14 ::
तुम तो गए
पगली यादें छोड़ें
ना मेरा द्वार। ❑

तुहिना रंजन

इसमे 1 और 7 एक ही हैं। कृपया देखें। इसी तरह 5वां और 10वां।

:: 1 ::
विदा तो दे दी
पीपल पूछे पर
कब आओगी?

:: 2 ::
मीठा-सा स्पर्श
बाबुल तेरे हाथ
लौटा दे कोई।

:: 3 ::
कोना सुहाना
जहाँ रूठूँ मनाना
खेल पुराना।

:: 4 ::
बचपन क्या?
इन्द्रधनुष जैसा
रंगीला मन।

:: 5 ::
मैया की बैयाँ
बहना का आँचल
छूटा मुझसे।

:: 6 ::
कुछ यूँ हुई
यादों की बरसात
भीग उठी मैं।

:: 7 ::
स्वप्न-से सजे
आँचल लहराए
वो याद आए।

:: 8 ::
तेरे आने की
आहट सुनने को
जी बेकरार।

:: 9 ::
महकी हवा!
उनका पता बता
जो मेरे पिया। ❑

सारिका मुकेश

:: 1 ::
सदा जीवंत
हो उठता अतीत
इन यादों में।

:: 2 ::
चलती यादें
मस्तिष्क-पटल पे
चलचित्र-सी।

:: 3 ::
जब भी आईं
भिगो गई अँखियाँ।
मधुर यादें।

:: 4 ::
कीमती मोती
हृदय की सीप में
तुम्हारी याद।

:: 5 ::
खिले कमल
मन के सरोवर
तेरी यादों के।

:: 6 ::
हुआ उदास
जब चुभी मन में
यादों की फाँस।

:: 7 ::
हों चाहे जैसी
कटता न जीवन
यादों के संग।

:: 8 ::
शांत मन में
बुलबुले-सी उठीं
सहसा यादें।

:: 9 ::
सुलग उठीं
दफ़न होती यादें
सीने में कहीं।

:: 10 ::
कसमें-वादे
दफ़न हुईं याद
पल-भर में। ❑

ज्योतिर्मयी पन्त

:: 1 ::
पुरानी यादें
परछाई-सा साथ
सुख-दुःख में।

:: 2 ::
छत की धूप
अँगना में दौड़ना
मन में टीस।

:: 3 ::
छोटे-से घर
परिवार में, प्यार
अब यादों में।

:: 4 ::
याद-सहारे
जीती वृद्ध पीढ़ियाँ
बीते दिनों की।

:: 5 ::
कड़वे बोल
पुराने घाव जैसे
टीसते सदा।

:: 6 ::
मन-सागर
ये यादों के भँवर
डुबा ले जाते। ❑

दिलबाग विर्क

:: 1 ::
पिया की रट
पपीहे ने लगाई
याद जो आई।

:: 2 ::
दूर गया जो
दिल से न निकला
यादों में बसा।

:: 3 ::
गिरते पत्ते
तेरी याद दिलाते
खूब रुलाते।

:: 4 ::
तन्हा कब थे
हमसफ़र सदा
यादें तुम्हारी।

:: 5 ::
साथ हमारे
चले है तेरी याद
साया हो जैसे।

:: 6 ::
दु:ख-बादल
बिजली की रेख-सी
चमकी याद।

:: 7 ::
आए थे याद
भूले-बिसरे पल
जी लूँ दुबारा!

:: 8 ::
दूरी सिमटी
जब भी याद किया
पास ही पाया। ❑

पुष्पा जमुआर

:: 1 ::
स्कूल को देखा
आँखों में तैर गई
सर की छड़ी।

:: 2 ::
माँ का मनाना
हमारा रूठ जाना
सुख अनोखा।

:: 3 ::
पिता की बातें
कितने अर्थ छुपे
जाना है अब!

:: 4 ::
गाड़ी में मिले
वे दो पल के साथी
कभी न भूले।

:: 5 ::
यादों की कथा
समा गई दिल में
आँखें छलकीं।

:: 6 ::
बसन्ती हवा
दिला जाती है याद
बीते दिनों की।

:: 7 ::
आँखों में आके
अक्सर तैर जाती
बच्चों की नाव।

:: 8 ::
दबे पाँव आ
मुझे घेर लेती हैं
तुम्हारी यादें। ❑

उमेश मोहन धवन

:: 1 ::
वही कसक
क्यों उठी आज फिर
बरसों बाद।

:: 2 ::
सहेजी तेरी
यादों की धरोहर
जीवन भर।

:: 3 ::
कुछ न था तो
वह आया क्यों याद
बरसों बाद?

:: 4 ::
जगा गया है
फिर नींद से मुझे
तेरा ख़याल।

:: 5 ::
यादों के पत्ते
कभी न उड़ पाए
तूफाँ भी आए। ❑

अनुपमा त्रिपाठी

:: 1 ::
मोम-सा मन
आँच मिली किसी की
पिघल गया।

:: 2 ::
भाव-घटाएँ
छाईं उर-अम्बर
बरसे आँसू।

:: 3 ::
मन मीन-सा
आकुल रहता है
लिये पिपासा।

:: 4::
मेरा हृदय
यादों की डोर-बँधा
पतंग बना। ❑

कृष्ण कुमार कायत

:: 1 ::
दिल ही काफी
याद में जलने को
बुझा दो दीप।

:: 2 ::
याद जो तेरी
सताती न मुझको
चैन से जीते।

:: 3 ::
भूलते कैसे
गहरा था बंधन
तेरी यादों का।

:: 4 ::
अँधेरा कहाँ?
उजालों-सजी याद
संग जो मेरे।

:: 5 ::
चहक उठा
अनजानी यादों से
मन का पंछी। ❑

❑❑❑

◆ माँ की आवाज़-
मन्दिर की घण्टी-सा
पावन राग।
-डॉ. सतीशराज पुष्करणा

◆ आँसू से लिखी
वो चिट्ठी जब खोली,
भीगी हथेली।
-रचना श्रीवास्तव

◆ पाँखुरी यादें
बिखरा जाऊँगी मैं
चुन लेना तू।
-कमला निखुर्पा

◆ खुली पिटारी
जहाँ-तहाँ वो गिरीं
यादें बिखरीं!
-डॉ. जेन्नी शबनम

◆ पत्तियाँ नहीं
झरतीं किताबों से
यादें तुम्हारी।
-डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा

◆ बंद खिड़की
दरारों से झाँकती
यादें चोरटी।
-प्रियंका गुप्ता

◆ यादों के ख़त
भटकते पहुँचे
बरसों बाद।
-डॉ. अनीता कपूर

◆ तुम्हारी याद
दिन देखे ना रात
आ बैठे पास।
-सुभाष नीरव

◆ तेरी वो याद
चूड़ी-सी खनकी थी
बरसों बाद।
-मंजु मिश्रा

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

शिक्षा : एम.ए. हिन्दी (मेरठ विश्वविद्यालय),बी.एड्.

प्रकाशन : 'माटी, पानी और हवा', अँजुरी भर आसीस, कुकड़ूँ कूँ, हुआ सवेरा, कविता-संग्रह), मेरे सात जनम (हाइकु-संग्रह), मिले किनारे ताँका और चोका संग्रह), धरती के आँसू, दीपा, दूसरा सवेरा (उपन्यास), असभ्य नगर (लघुकथा-संग्रह), खूँटी पर टँगी आत्मा (व्यंग्य-संग्रह), भाषा-चन्द्रिका (व्याकरण), फुलिया और मुनिया (बालकथा), अनेक लघुकथाएँ अनूदित। 18 सम्पादित संग्रह। **ई-मेल :** rdkamboj@gmail.com, **मोबाइल :** 9313727493

डॉ. भावना कुँअर

शिक्षा : हिन्दी व संस्कृत में स्नातकोत्तर उपाधि, बी.एड्., पी-एच.डी. (हिन्दी), तीन विषयों में डिप्लोमा।

प्रकाशित पुस्तकें : तारों की चूनर, धूप के खरगोश (हाइकु संग्रह), साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल में विद्रोह के स्वर (शोध-प्रबन्ध), अक्षर सरिता, शब्द सरिता, स्वर सरिता (हिन्दी भाषा-शिक्षण की शृंखला), **संपादन :** चन्दनमन (हाइकु-संग्रह), भाव कलश (ताँका संग्रह), गीत सरिता (बालगीतों का संग्रह - तीन भाग) **संप्रति :** सिडनी यूनिवर्सिटी में अध्यापन

ई-मेल : bhawnak2002@gmail.com

डॉ. हरदीप कौर सन्धु

शिक्षा : बी.एससी., बी.एड्., एम.एससी. (वनस्पति विज्ञान), एम.फिल., पीएच.डी.

प्रकाशन : मिले किनारे (ताँका और चोका संग्रह), 'चन्दनमन', 'भाव-कलश' में ताँका प्रकाशित। हिन्दी-पंजाबी की अंतर्जाल-पत्रिकाओं में कविताएँ, हाइकु, ताँका तथा चोका, लघुकथा प्रकाशित। वेब पर हिन्दी हाइकु, त्रिवेणी (ताँका-चोका और माहिया), हाइकुलोक (पंजाबी-हाइकु) ब्लॉग प्रकाशित। **सम्प्रति :** सिडनी (आस्ट्रेलिया में) में अध्यापन।

ई-मेल - hindihaiku@gmail.com

रचना श्रीवास्तव

शिक्षा : बी.एससी., एम.ए. (हिन्दी), बी.एड्.

कवि गोष्ठियों में भाग लिया। अभिनय में अनेक पुरस्कार और स्वर्ण पदक मिला, लोक संगीत और नृत्य में पुरस्कार, रेडियो फन एशिया, रेडियो सलाम नमस्ते (डैलस), रेडियो मनोरंजन (फ्लोरिडा), रेडियो संगीत (ह्यूस्टन) में कविता पाठ। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित। **सम्प्रति :** अब डैलस में निवास।

ई-मेल - rach_anvi@yahoo.com